सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ हिंदी में

भगवान शिव उवाच–

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥

हे देवी, सुनो। मैं उत्तम कुंजिका स्तोत्र के ज्ञान का उपदेश दूंगा, जिसके प्रभाव से देवी चण्डी का जप (पाठ) सफल होता है।

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥
इसके लिए कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास तथा यहाँ तक कि अर्चन की भी आवश्यकता नहीं है।

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥
केवल कुंजिका स्तोत्र के पाठ मात्र से दुर्गापाठ का फल मिल जाता है। यह सिद्ध कुंजिका स्तोत्र बहुत गुप्त और देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति

मारणं मोहनं वश्यं स्तंभोच्चाटनादिकम।
पाठमात्रेण संसिध्येत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥
हे देवी पार्वती! इसे स्वयोनि (अपने गुप्तांग) की तरह सायास गुप्त रखना चाहिए। यह उत्तम कुंजिका स्तोत्र केवल पाठ के द्वारा मारण, मोहन, वशीकरण, स्तंभन व उच्चाटन आदि (आभिचारिक) उद्देश्यों को सिद्ध करता है ॥4॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

मन्त्र – ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

॥ इति मंत्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।|
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥

हे रुद्र के स्वरूप वाली देवी! हे मधु दैत्य को मारने वाली! कैटभ-विनाशिनी को नमस्कार है। महिषासुर को मारने वाली हे देवी! तुम्हें प्रणाम है।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥२॥

शुम्भ दानव का वध करने वाली और निशुम्भ का नाश करने वाली, हे देवी! तुम्हें नमस्कार है। हे महादेवि! मेरे इस जप को जाग्रत व सिद्ध करो।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ऐंकारी सृष्टिरुपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोस्तु ते ॥३॥
“ऐं” के रूप में सृष्टि-स्वरूपिणी, “ह्रीं” के रूप में जगत् का पालन करने वाली और “क्लीं” के रूप में कामरूपिणी व समस्त ब्रह्माण्ड की बीज-रूपिणी हे देवी! तुम्हें नमस्कार है।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥४॥
चामुण्डा के रूप में चण्ड का नाश करने वाली और “यै” के रूप में तुम वर देने वाली हो। “विच्चे” रूप में तुम सदैव ही निर्भयता देती हो। इस तरह तुम ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – इस मन्त्र का स्वरूप हो।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥५॥
“धां धीं धूं” के रूप में धूर्जटी अर्थात शिव की तुम पत्नी हो। “वां वीं वू” रूप में तुम वाणी की अधिष्ठात्री हो। “क्रां क्रीं क्रूं” रूप में कालिका देवी हो। हे देवी! “शां शी शूं” के रूप में मेरा कल्याण करो।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥६॥
हुं हुं हुंकार स्वरूपिणी, जं जं जं जम्भनादिनी, भ्रां भ्रीं भ्रूं के रूप में हे कल्याणकारिणी भैरवी भवानी! तुम्हें पुनः-पुनः प्रणाम है।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥७॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं इन सबको तोड़ो और दीप्त करो, करो स्वाहा।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥८॥
“पां पी पूं” रूप में तुम पार्वती पूर्णा हो। “खां खीं खूं” के रूप में तुम खेचरी अर्थात् आकाश-चारिणी या हठयोग की खेचरी मुद्रा हो। “सां सीं सूं” रूपी सप्तशती देवी के मन्त्र को मेरे लिये सिद्ध करो।

हिन्दीपथ.कॉम

इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

यह कुंजिका स्तोत्र मन्त्र को जगाने के लिये है। इसे भक्ति हीन पुरुषको नहीं देना चाहिये। हे पार्वती! इसे गुप्त रखो। हे देवी! जो बिना सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के सप्तशती का पाठ करता है उस व्यक्ति को उसी तरह सिद्धि नहीं मिलती जैसे वन में रोना निरर्थक होता है।

॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

इस प्रकार श्रीरुद्रयामलके गौरीतन्त्र में शिव-पार्वती संवाद में सिद्ध कुंजिका स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ

हिन्दीपथ.कॉम